M.A - II SEMESTER CC-5

प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

इकाई - 4 चम्पू काव्य

Q! चम्पू काव्य में कुवलयमाला का आलोचना प्रस्तुत करें?

Ans- कुवलयमाल चम्पू काव्य में धर्म कथा, काव्य और दर्शन का एक साथ समन्वित रूप वर्तमान है। इसमे प्रधान रूप से क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह इन पाँचों विकारों का परिणाम प्रदर्शित करने के लिए अनेक अवान्तर कथानकों का गुम्फन किया गया है। पत्ते के भीतर पत्तेवाले कदलीस्तम्भ के समान कथाजाल का संघटन काव्य गुणों से युक्त है। कथानक का जितना विस्तार है, उससे कही अधिक वर्णनों का बाहुल्य है, पर कथावस्तु का विकास आश्वासों में नही किया गया है। अन्धविश्वास, मिथ्यात्व वितण्डावाद एवं क्रोधित विकारों का विश्लेषण तर्कपूर्ण दार्शनिक शैली में किया है।

इस चम्पू काव्य मे चरित्र वर्ग विशेष का ही प्रतिनिधित्व करते है, संस्कृत काव्यों के समान चरित्रों में व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा नही हो पायी है अभिजात्यवर्ग के चरित्रों में पूरा उदात्तीकरण उपलब्ध है।

इसमे सन्देह नही कि इस चम्पू काव्य में हरिभद्र की अपेक्षा काव्यात्मकता अधिक है। कथात्मक संकेत आरम्भ से ही उपलब्ध होने लगते है। पूर्व में कुमार महेन्द्र का प्राप्त होना, राजा दृढवर्मा को पुत्र प्राप्ति का संकेत करना है। इतना होने पर भी

Scanned with CamScanner

मूल कथा में अवान्तर कथाओं की संघटना, उनके पारस्परिक सम्बन्ध एवं चरित्रों के विश्लेषण क्रम के लिए उद्योतन सूरि अपने पूर्ववर्ती प्राकृत काव्यों के आभारी हैं।

कुवलयमाला में प्रौढ़ समासयुक्त गद्य का प्रयोग किया गया है। यहाँ उदाहरणार्थ उद्धरण प्रस्तुत किये जाते हैं। इन उद्धरणों में कवि ने दृश्यों का साकार चित्रण किया है। यह गद्य का प्रौढ़ रूप किसी भी चम्पू काव्य के गद्य से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

इस गद्य खण्ड में कवि ने सुषेण द्वारा मालवनरेन्द्र के साथ दृढ़वर्मा की सेना के साथ किये गये युद्ध का वर्णन किया है। कवि ने तलवारों की सरसराहट और खनखनाहट का अनुरणनात्मक ध्वनियों द्वारा सजीव चित्रण किया है। तलवारों की परस्पर टकराहट से उत्पन्न होनेवाली अग्नि चिनगारियों का जाज्वल्यमान रूप उपस्थित किया है।

इसी सन्दर्भ में शबर सेनापति सुषेण अपनी सेना के पराक्रम का चित्रण करता हुआ युद्ध की भीषणता का रूप उपस्थित करता है।

कवि ने एक साथ रानी-प्रियंगुश्यामा, सूर्य और सन्ध्या इन तीनों के चरित्र की व्यंजना की है।

गर्भवती होने पर रानी किस प्रकार शोभित होती है, इसका चित्रण कवि ने उपमा द्वारा किया है। इस प्रकार इस चम्पू काव्य में रस एवं भावादि की अभिव्यंजना सम्यक् प्रकार सम्पन्न हुई है। इसमें सूक्तियों की भी बहुतता है। कवि ने सूक्तियों द्वारा भावों को चमत्कारपूर्ण किया है।